जनजातियों का साहित्य और कला समृद्ध, मंच मिलने से होगी परिष्कृत

दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य हमें आदिवासी भाषाओं में मिलता है। इस दृष्टि से आदिवासी साहित्य सभी साहित्य का मूल स्रोत है। भारत की बात करें तो जनजातियों का साहित्य और कला काफी समृद्ध रही है। यह बात अलग है कि आजादी के बाद इसके संवर्धन के प्रयास नहीं हुए। हालांकि, बीते कुछ सालों से स्थितियां बदली हैं। जनजातियों की कला, संस्कृति और साहित्य पर काफी काम हुआ है। रवींद्र सभागम में चल रहा अंतरराष्ट्रीय साहित्य व कला उत्सव उन्मेष और उत्कर्ष भी इसी का उदाहरण है, जहां लोक साहित्य और लोक कला को पहली बार इतना बड़ा मंच मिला है। उत्सव में भाग लेने आए कुछ जनजातीय साहित्यकार और कलाकारों से नवदुनिया ने जाना कि यह मंच उनके लिए कितना सार्थक रहा। क्योंकि यह रचनाएं दुनिया से कटी हुई नहीं रहेंगी। लोग उनकी संस्कृति को भी समझ पाएंगे। वहीं, दूसरी ओर वे इस मंच के माध्यम से जान पा रहे हैं कि साहित्य की दुनिया में क्या रचा जा रहा है। प्रस्तुत है उनसे चर्चा के कुछ प्रमुख अंश।

उन्मेष में सहभागिता करने से आए जनजातीय कवि और कलाकार से चर्चा

भाव तो वही रहेगा, लेकिन तरीके में बदलाव करूंगा

मैं बोडो और असमिया बोली में कविता और शेर पिछले आठ साल से लिख रहा हूं। इंटरनेट मीडिया के कारण युवा पीढ़ी इस विधा की ओर आकर्षित हुई है। पहली बार उन्मेष के मंच से मेरी रचनाएं इसने बड़े श्रोता वर्ग तक पहुंची हैं। देशभर के लेखकों से मिला और उनके रचना संसार को समझने का मौका मिला। अब आगे जो भी लिखूंगा, उसमें और परिष्कार देखने को मिलेगा। रचनाओं के भाव वही रहेंगे, लेकिन तरीके में बदलाव देखने को मिलेगा।

– **न्यूटन बसुमतारी**, असम

सबसे बड़े मंच पर पहली बार प्रस्तुति देने का मिला अवसर

गोंड नृत्य की प्रस्तुति देने दंतेवाड़ा से अपने दल के साथ आई हूं। भोपाल आकर बहुत अच्छा लगा। इतने बड़े मंच पर प्रस्तुति देने का मौका हम कलाकारों को पहली बार मिला है। उत्कर्ष में हमें बहुत प्यार मिला। हमें खुशी है कि हमारी कला को इतना बड़ा अवसर दिया गया। हम अपनी ताकत और अपने हुनर को पहचान चुके हैं। अब हमें कहीं भी किसी भी समारोह में प्रस्तुति देने जाने में कोई हिचक नहीं रहेगा। यहां आकर पूरे देश के लोक नृत्यों को देखना सकारात्मक अनुभव रहा है।

– **दुर्गेश्वरी, गोंडी** नृत्यांगना, छत्तीसगढ

अब मैं पहाड़ी बोली में और उत्साह से रचनाकर्म करूंगा

मैं पहाड़ी बोली ठाकरी और मराठी में कविताएं लिखता हूं। साहित्य अकादमी यदि मुझ जैसे लोक कवि को यहां न बुलाती तो अपने गृह जिले नासिक से बाहर कभी नहीं निकल पाता। यहां आकर विभिन्न भाषाओं के साहित्य के बारे में जाना और रचनाएं सुनने को मिलीं। कई लोगों ने तो पहली बार ठाकरी बोली के बारे में मेरी रचनाओं के माध्यम से जाना। अब मैं अपनी पहाड़ी बोली में और उत्साह से रचनाकर्म करूंगा। हालांकि, ठाकरी की लिपि मराठी है।

तुकाराम धांडे, लोक कवि, महाराष्ट्र